P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

संस्कृत भाषा की गौरव–गरिमा एवं जीवन्तता

उषा नागर
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान

सारांश

सारे संसार में यद्यपि असंख्यक भाषाएं हैं उन भाषाओं में संस्कृत भाषा सर्वोत्तम है। संस्कारयुक्त, दोष रहित व परिष्कृत भाषा को ही संस्कृत भाषा कहा जाता है। इसको देववाणी, सुरवाणी और गीर्वाणवाणी भी कहा जाता है –

संस्कृतं नाम दैवीवागन्वा ख्याता महर्षिभिः ।।

संस्कृत भाषा निश्चित रूप से जीवन्त भाषा है। यह भाषा चिर–पुरातनी, सनातनी तथा प्रत्येक युग में पुनः पुनः उत्पन्न होने वाली उषा के समान नवीन छवी का पुनः पुनः आविर्भाव करने वाली अपनी गरिमा से प्रतिष्ठिता, सुरभारती संसार की सभी भाषाओं की जननी है। भारत की तो सभी भाषाएं इसकी पुत्री हैं। जितना विशाल साहित्य संस्कृत भाषा का है उतना अन्य भाषाओं का नहीं है। स्वयं भगवत मुख से निर्गत संसार के उपदेशकारक चार वेद संस्कृत भाषा में ही विराजमान हैं। इन वेदों को विश्व वाङ्मय का प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है। प्रायः सभी देशों में इनका अध्ययन किया जाता है। सैकड़ों पुस्तकें पाश्चात्य विद्वानों द्वारा वेदों पर लिखी गई हैं। उपनिषद् भी संस्कृत के गौरव का प्रतिपादन करते हैं। पाश्चात्य विद्वान् उपनिषदों को भी विश्व के लिए हितकारी मानते हैं।

मुख्य शब्द : संस्कृत भाषा की गौरव गरिमा।

प्रस्तावना

सुरभारती संस्कृत वाङ्मय का विश्व के समस्त वाङ्मय में अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान है। संस्कृत भाषाओं को भारतीय भाषाओं की जननी भाषा के रूप में सम्मान प्राप्त है। प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का परिचय पाने के लिए संस्कृत साहित्य का अनुशीलन करना अत्यन्त आवश्यक एवं उपादेय माना गया है। वैदिक संस्कृत साहित्य को तो विश्व का प्राचीनतम लिखित साहित्य की संज्ञा दी जाती है।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहस्ति न तत् क्वचित्।

महाभारत की यह उक्ति सम्पूर्ण धर्मग्रंथों, वेदों एवं सम्पूर्ण लिखित साहित्य के लिए चरितार्थ होती है। संस्कृत साहित्य की विविधरूपता, गुणवत्ता की गरिमा, वैशिष्ट्य एवं काव्यात्मक सौष्ठव सभी कुछ अद्वितीय है–

विद्वांसो हि देवाः ।

विद्वानों को ही देवता कहते हैं। इस आधार पर संस्कृत को देवभाषा कहा जाता था। यह विद्वानों, शिष्टों और तत्वों ज्ञानियों की भाषा थी। ईस्वी सन् के प्रारम्भ से पूर्व तक संस्कृत का प्रयोग विद्वज्जन–भाषा और राजभाषा के रूप में प्रचलित था।

संस्कृत भाषा का विकृत रूप प्राकृत भाषा है। इसमें व्याकरण के नियमों आदि का पूर्णतया पालन न होकर नदी की धारा के प्रवाह के तुल्य जनजीवन में प्रयुक्त भाषा का अक्षुण्ण रूप रहता है। अतः एक संस्कृत भाषा के प्रयोग के आधार पर अनेक प्राकृत भाषाएँ प्रादुर्भूत हुई।

भारतवर्ष का समस्त प्राचीन ज्ञान भण्डार संस्कृत में ही हैं। भारतीयों के सभी धर्मग्रंथ, पुराण, रामायण, महाभारत, स्मृतिग्रंथ, धर्मशास्त्र, महाकाव्य, काव्य, नाटक, गद्यकाव्य, गीतिकाव्य, आख्यान साहित्य आदि संस्कृत में ही हैं। इतना ही नहीं व्याकरण, काव्यशास्त्र, गणित, ज्योतिष्, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र, अयुर्वेद, धनुर्वेद, वास्तुकला, अर्थ–शास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, छन्दशास्त्र और कोषग्रंथ तक संस्कृत में ही हैं। ज्ञान–विज्ञान का ऐसा कोई अंग नहीं है जो संस्कृत भाषा में उपलब्ध नहीं है। यह प्राचीन ऋषि, महर्षियों, मनीषियों, कवियों और तत्त्वज्ञों के अथक परिश्रम का ही फल है कि इतना विस्तृत वाङ्मय संस्कृत में उपलब्ध है।

गीता नामक ग्रंथरत्न जो संस्कृत साहित्यमाला का मध्यमणि है, का महत्त्व प्रदर्शित करते हुए किसी विद्वान ने लिखा है–

का समस्या समस्तेऽपि संसारे जटिलास्ति या।
समाहिता न गीतायां श्रीकृष्णेन महात्मना।।

इस प्रकार गीतारूपी अमृत ने संस्कृत के गौरव को बढ़ाया है। पाश्चात्य दर्शन तो षट्दर्शन की प्रतिच्छाया मात्र है। इसके अतिरिक्त कालिदास, भास, भवभूति, प्रभृतिभि विश्वविख्यात महाकवियों के द्वारा रचित महाकाव्य व नाटक समस्त संसार में सम्मानित है।

संक्षेप में संस्कृत का उद्देश्य एवं महत्त्व निम्नलिखित है –

प्रायः संस्कृत को मृतप्रायः भाषा माना जा रहा है किन्तु मेरे शोध पत्र का उद्देश्य इसको जीवन्त बताना है।

1. इसमें विश्व का सबसे प्राचीनतम साहित्य उपलब्ध है। जिसमें वैदिक साहित्य, मुख्यतया ऋग्वेद विशेष उल्लेखनीय है।
2. विश्व की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता की जानकारी के लिए संस्कृत ही एकमात्र साधन है।
3. विश्व संस्कृति की आधारशिला संस्कृत वाङ्मय में ही उपलब्ध है। इसके आधार पर ही विश्व संस्कृति की तुलनात्मक रूपरेखा प्रस्तुत की जाती है।
4. भारोपीय परिवार की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत है। इसके तुलनात्मक अध्ययन से ही तुलनात्मक भाषा–विज्ञान का जन्म हुआ है।
5. संस्कृत में ज्ञान, विज्ञान, कला संस्कृति, धर्म, दर्शन, अर्थशास्त्र, व्याकरण और आयुर्वेद आदि पर जितना विस्तृत प्राचीन वाङ्मय उपलब्ध होता है उतना विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं है।
6. संस्कृत साहित्य ने न केवल एशिया महाद्वीप के ही विभिन्न देशों की भाषाओं और संस्कृतियों को प्रभावित किया, अपितु यूरोप और अमेरिका खण्ड की भाषाओं और संस्कृतियों पर भी इसकी अमिट छाप है।
7. प्राचीन भारतीय साहित्य का महत्त्व पूर्णतः उसकी मौलिकता के कारण है। भारोपिया परिवार की कोई और भाषा ऐसी नहीं है जिसे इस प्रकार स्वंत्रत विकास का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। चीन को छोड़कर और कोई भारत जैसा देश नहीं है, जो अपनी भाषा और साहित्य का अपनी धर्मिक धारणा एवं विधियों का, अपनी सामाजिक एवं पारिवारिक रूढ़ियों का 3000 वर्षों से अधिक पूर्व समय से अव्याहत गति से विकास बतला सकता हो।
8. संस्कृत वाङ्मय का अध्ययन और अधिक ध्यान देने योग्य है। कारण यह मानव जाति की वह प्राचीन सभ्यता है, जिसमें हमारे भारतीय साम्राज्य के अधिकांश प्रजाजन हिन्दुओं की भाषाएँ, धार्मिक एवं बौद्धिक जीवन तथा विचार अथवा समग्र सभ्यता का मूल ही निष्ठित है।
9. मानव जाति के विकास के अध्ययन का मूलस्रोत होने के कारण भारतीय वाङ्मय ग्रीक साहित्य की अपेक्षा कहीं अधिक उत्कृष्ट है।
10. यद्यपि अनेक शाखाओं में संस्कृत–साहित्य ने उत्कृष्टता प्राप्त की है तथापि धर्म एवं दर्शन के क्षेत्र में इसका उत्कर्ष अत्यधिक है।
11. वैदिक साहित्य एवं संस्कृत साहित्य के अधार पर ही मैक्समूलर और एडलबर्ट कुहन ने तुलनात्मक प्राचीन कथा विज्ञान नामक विज्ञान को जन्म दिया है।
12. भारतीय संस्कृत साहित्य की विपुलता को देखकर बुद्धि दंग रह जाती है। भारतीय पाण्डुलिपियों की विपुल सूचियॉ भारत तथा यूरोप के पुस्तकालयों में सर्वत्र सहस्रों लेखकों और ग्रंथों के नाम गिनाती है। इससे संस्कृत साहित्य की विशालता का अनुमान लगाया जा सकता है।
13. भारतीय साहित्य की प्राचीनता, भूगोल तथा विकास की दृष्टि से व्यापकता, उसकी आन्तरिक संभूति एवं कमनीयता और मानव–संस्कृति के इतिहास की दृष्टि से उसका मूल्य ये सब चीजें हैं जो पाश्चात्य जगत् को इसकी महत्ता, मौलिकता तथा प्राचीनता की ओर बरबस ही आकर्शित कर लेती हैं।
14. यह भारत का प्राचीन साहित्य ही था जिसके द्वारा विश्व के इतिहास में एक युगान्तर आया और परिणामतः अब हम पूर्व और पश्चिम के बिसरे प्रागैतिहासिक सम्बन्धों को कुछ–कुछ समझने लगे हैं।
15. यदि हम इण्डो यूरोपियन संस्कृति के प्राचीनतम रूप को अवगत करना चाहते हैं तो इसके लिए हमें भारत का मुखोपेक्षी होना पड़ेगा।
16. भारतीय संस्कृति का विशुद्ध स्वरूप जानने के लिए संस्कृत साहित्य ही एकमात्र साधन है।
17. भारतीयों में प्रबुद्ध विचारों, दार्शनिक, चिन्तनों, धार्मिक संस्कारों, ज्ञान–विज्ञान की अनुपम उपलब्धि के मार्मिक ज्ञान के लिए संस्कृत साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है।
18. वाल्मीकि, वेदव्यास, कालिदास, भवभूति आदि के उदात्त काव्य सौन्दर्य, रचना चातुर्य, प्रकृति प्रेम और आदर्श जीवन दर्शन के लिए संस्कृत का यथार्थबोध अत्यावश्यक है।
19. तात्विक चिन्तन मनोविज्ञान, शिक्षा–दर्शन, भाषाशास्त्र, प्राचीन विधान, प्राचीन गणित, ज्योतिष्, प्राचीन राज्यतंत्र, राजनीति, धर्मशास्त्र, अर्थ के सूक्ष्मतम ज्ञान के लिए संस्कृत वाङ्मय ही आश्रय है।
20. विश्व प्रेम, विश्व बन्धुत्व एवं विश्व संस्कृति के आधारभूत तत्वों की समीक्षा, परीक्षा और अन्वीक्षा के लिए संस्कृत का अनुशीलन अत्यन्त आवश्यक है।

संस्कृत जीवन्त भाषा है (संस्कृत बोलचाल की भाषा थी) – यास्क के निरूक्त, पाणिनी की अष्टाध्यायी और पतंजलि के महाभाष्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनके समय में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। अधिकांश विद्वानों का मत है कि ईस्वी सन् से पूर्व संस्कृत केवल विद्वज्जनों की भाषा थी और इसी में उच्चकोटि के साहित्य की रचना होती थी। सामान्य जनता, प्राकृत भाषा का प्रयोग करती थी। इसके विषय में विद्वानों का विचार है कि ईस्वी सन् से पूर्व संस्कृत राजभाषा के रूप में व्यवहृत होती थी। राजकीय कार्य, शासकीय आदेश, विद्वज्जनों के वाद–विवाद, शास्त्रीय चर्चा, ज्ञान विज्ञान के उत्कृष्ट ग्रंथों की रचना तथा विद्वद्वर्ग का पारिस्परिक संवाद आदि संस्कृत भाषा में होता था। सामान्य जनता

संस्कृत के ही विकृत रूप प्राकृत भाषा का प्रयोग करती थी। संस्कृतज्ञ भी दैनिक व्यवहार में प्राकृत का प्रयोग करते थे। और सामान्य जन भी संस्कृत समझने और बोलने की क्षमता रखते थे।

संस्कृत प्राचीन समय में बोलचाल की भाषा थी, इसके समर्थन में कुछ तथ्य उपलब्ध होते हैं –

1. निरूक्तकार यास्क (लगभग 700 ई.पू.) ने संस्कृत को भाषा अर्थात् बोलचाल की भाषा कहा है– **न इति प्रतिषेधापीयों भाषायाम्। भाषिकेभ्यो धातुभ्यो नैगमा कृतो भाष्यन्ते।**
2. पाणिनी ने (56 वीं शती ई.पू.) ने भी अनेक सूत्र ऐसे दिए हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि बोलचाल की भाषा के ये नियम बनाए गए हैं जैसे – दूर से पुकारने में अन्तिम स्वर को प्लुत।

सूत्र–दूराद्धूते च।

पाणिनी ने वैदिक भाषा के लिए छन्दस् और लोक प्रचलित भाषा के लिए भाषा शब्द का प्रयोग करके दोनों का अन्तर स्पष्ट किया है।

सूत्र – बहुलं छन्दसि।
भाषायां सदव सश्रुवः।

3. कात्यायन ने चतुर्थ शती ईस्वी पूर्व अपने वार्तिकों में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि लोक में प्रचलित शब्दों को आधार मानकर ही संस्कृत व्याकरण की रचना हुई है।
4. पतंजलि के (150 ई.पू के लगभग) महाभाष्य में अनेक उदाहरणों से संस्कृत के बोलचाल की भाषा होने के प्रमाण मिलते हैं– **'लोकतोऽर्थ प्रयुक्ते शब्द प्रयोगे शास्त्रेण धर्मनियम।'** अर्थात् लोक व्यवहार में प्रयुक्त शब्दों के प्रयोग से शास्त्र के नियम बनाये जाते हैं। **'' यथा लोक वेदे चेति प्रयोक्तव्ये यथा लौकि वैदिकेश्विति, प्रयुञ्जते।।''**
5. रामायण और महाभारत काल में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी, यह पाश्चात्य विद्वान् भी स्वीकार करते हैं।
6. बौद्धकवि अश्वघोष ने (प्रथम शती) प्राकृत को छोड़कर विवश हो संस्कृत में ही बुद्धिचरित और सौन्दरनन्द महाकाव्यों की रचना की, क्योंकि संस्कृत के माध्यम से बौद्धधर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करना सुकर था।
7. वैद्यराज चरक ने (प्रथम शती ई.) चरक संहिता में वैद्यों के वार्तालाप में संस्कृत भाषा के प्रयोग का उल्लेख किया है।
8. द्वितीय शताब्दी के बाद अधिकांश शिलालेख संस्कृत में ही लिखे गये।
9. चीनी यात्री ह्वेनसांग (7वीं शताब्दी ई.) ने उल्लेख किया है कि बौद्ध लोग शास्त्रीय वाद–विवाद या शास्त्रर्थ में संस्कृत का ही व्यवहार करते थे।

इसलिए संस्कृत को मृतभाषा कहना सर्वथा हास्यास्पद है। प्राचीन काल में ही नहीं वर्तमानकाल में भी संस्कृत जीवित भाषा के तुल्य प्रयोग में आ रही है। यथा–

(क) सैकड़ों संस्कृतज्ञ विद्वान् संस्कृत में वार्तालाप, शास्त्रार्थ एवं पत्र व्यवहार करते हैं।
(ख) आज भी संस्कृत में 1. साप्ताहिक, 2. पाक्षिक, 3. मासिक, 4. त्रैमासिक पत्र – पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं।
(ग) आज भी संस्कृत में गद्य, पद्य एवं काव्यों की रचना हो रही है।
(घ) आज भी संस्कृत ग्रंथों को कण्ठस्थ करने की प्रक्रिया जारी है।
(ङ) विवाह आदि संस्कार संस्कृत में होते हैं।
(च) सन्ध्या, हवन, गायत्री पाठ आदि संस्कृत में ही होते हैं।
(छ) धार्मिक पूजन आदि की सभी विधियॉ पूरे भारत में संस्कृत में ही होती है।
(ज) आज भी संस्कृत नाटकों का अभिनय होता है।
(झ) आज भी संस्कृत फिल्म निर्माण का कार्य किया जाता है, आदि शंकराचार्य तथा मुद्राराक्षसम् संस्कृत फिल्में बनी हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि न केवल प्राचीन काल में अपितु वर्तमान काल में भी संस्कृत का महत्त्व यथावत् है। वह न केवल जीवित है अपितु जीवन्त भाषा है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. प्रायः संस्कृत भाषा को मृतप्रायः भाषा माना जा रहा है किन्तु शोध अध्ययन से संस्कृत भाषा की जीवन्तता को मालुम किया है।
2. विश्व की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता को संस्कृत भाषा से मालूम किया जा सकता है।
3. संस्कृत भाषा से तुलनात्मक भाषा विज्ञान का विकास हुआ है।
4. भाषा के क्षेत्र में संस्कृत–साहित्य ने उत्कृष्टता प्राप्त की है तथा धर्म एवं दर्शन के क्षेत्र में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।
5. संस्कृत भाषा के माध्यम ये इण्डो यूरोपियन संस्कृति के प्राचीनतम रूप को मालुम किया जा सकता है।
6. संस्कृत भाषा ने विश्व प्रेम, विश्व बन्धुत्व एवं विश्व संस्कृति के आधारभूत तत्वों की समीक्षा, परीक्षा और अन्वीक्षा आकद को उत्पन्न किया है।

संदर्भ ग्रथ सूची

1. महाभारत आदिपर्व –62–63
2. डॉ. कपिल द्विवेदी , संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास।
3. निरूक्त –2/2
4. अष्टाध्यायी – पाणिनी 8/2184
5. अष्टाध्यायी – पाणिनी 2/4/39, 3/2/108
6. महाभाष्य पतंजलि आह्निक–1
7. वाचं चोदाहरिश्यामि मानुषीमि संस्कृताम्–वा सुन्दरकाण्ड 30–27
8. Keith and Griesson, JRAS 1906
9. मैकडॉनल, – संस्कृत साहित्य का इतिहास – हिन्दी अनुवाद।
10. मैकडॉनल, पाल डायसन , डॉ. आर.जी. भण्डारकर, एस. कृष्ण वर्मा आदि के संस्करण।
11. संस्कृत साहित्य का इतिहास – परमानन्द गुप्त।
12. संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास – कृष्ण चैतन्य, अनु. विनय कुमार राय, चौखम्बा विद्या प्रकाशन , वाराणसी, 1965
13. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – सत्यनाराण पाण्डेय, साहित्य भण्डार, मेरठ, 1975
14. हिस्ट्री ऑफ क्लासिकल संस्कृत लिटरेचर – एस. कृष्णाचार्यरियर, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली 1970.